आकृति

एक बार चार दोस्त होते हैं।

आपस में बहस होती है कि कौन सुंदर है ।

वर्ग कहता है कि मैं सुंदर हूँ , क्योंकि मेरी चार भुजाएं हैं।

तभी आयात कहता है कि तुम तो चारों तरफ से बराबर हो तुम कैसे सुंदर हो? सुंदर तो मैं हूं मेरी लंबाई व चौड़ाई बराबर है , इसलिए मैं सुंदर हू ।

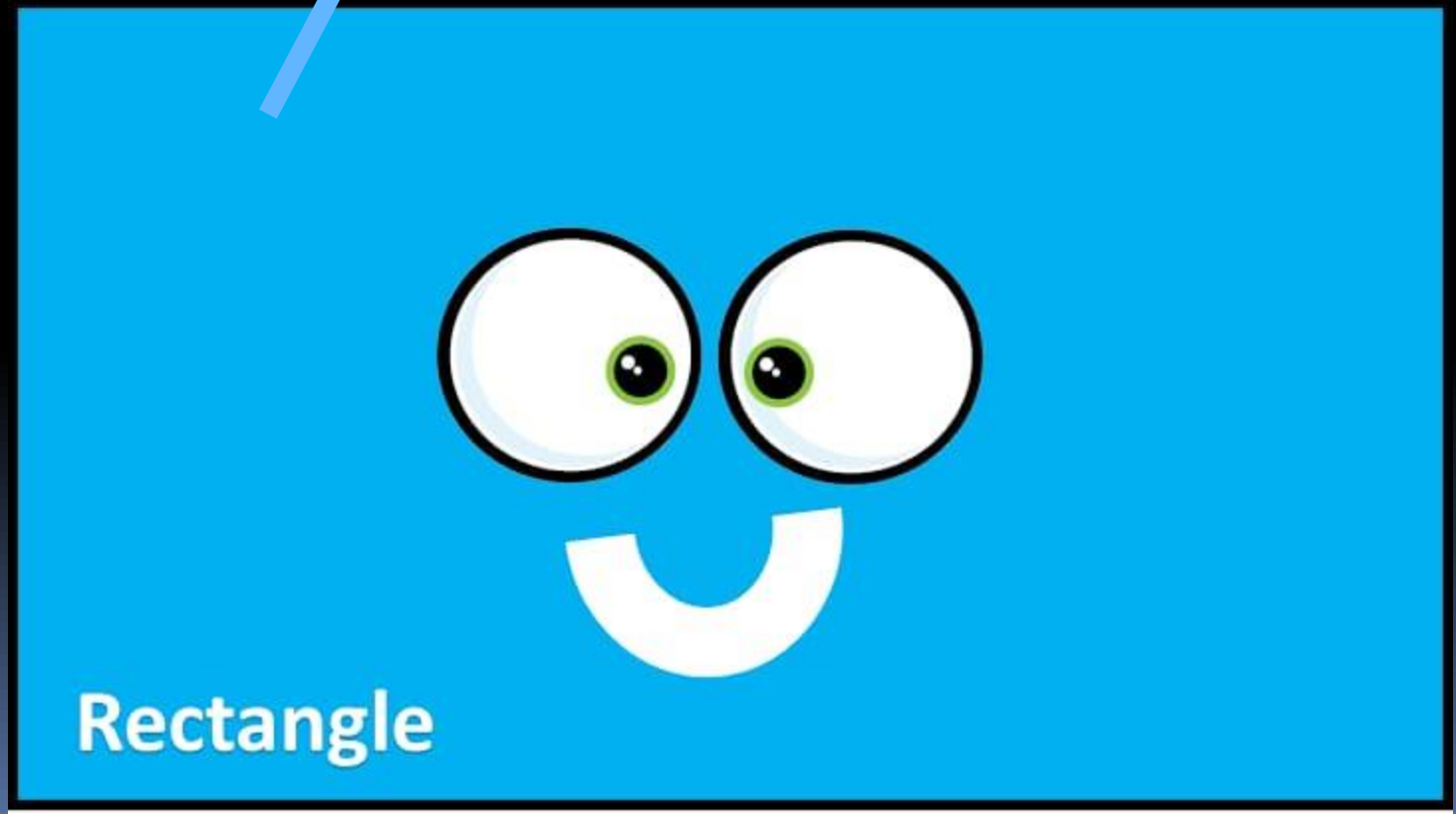

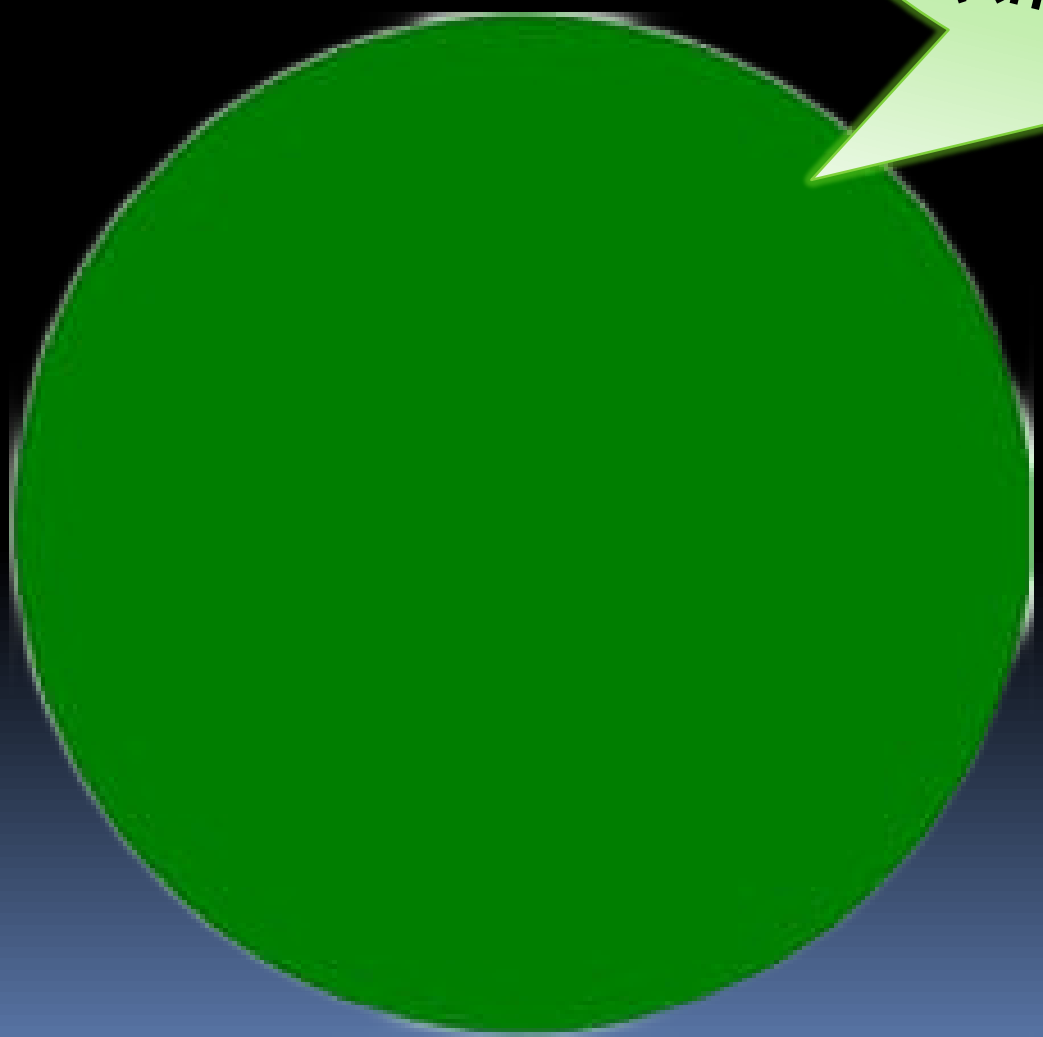

तभी गोलाकार कहता है
कि तुम दोनो से सुंदर तो
मैं हू मैं तो गोल मटोल हूँ
,इसलिए मैं सबसे सुंदर हूँ।

तभी त्रिकोण कहता है कि तुम तीनों
कहां से सुंदर हो सुंदर तो मैं हूँ मेरी
तीन भुजाएं हैं और तीनों अलग-अलग
हैं, इसलिए मैं सुंदर हूँ ।

तभी अंडाकार वहां आती है और कहती है तुम आपस में झगड़ा मत करो क्यूँकि सभी का अपना-अपना गुण है इसलिए तुम सभी सुंदर हो।

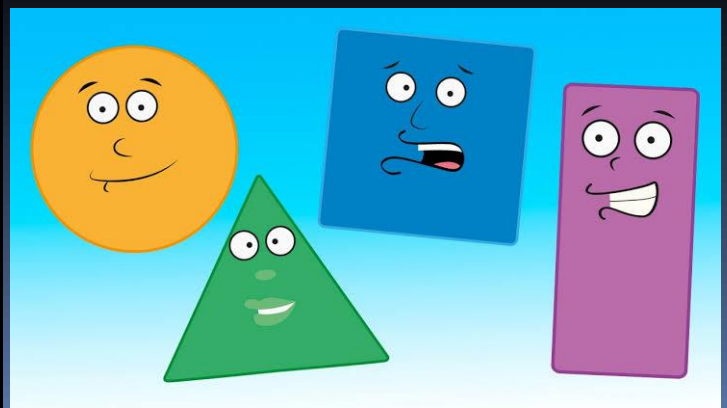

शिक्षा :-

किसी को अपने से कम नहीं समझना चाहिए क्यूँकि सभी में कुछ न कुछ विशेष गुण होता ही है ।